कार्यशाला के दौरान शैक्षिक भ्रमण का अनुभव

अनुज कुमार*

यात्रा-वृत्तांत चाहे स्वयं का हो या दूसरों का, यदि हम पढ़ते हुए उसके साथ जुड़ने का प्रयास करते हैं तो हमें भी ऐसी अनुभूति होती है जैसे हम स्वयं ही यात्रा कर रहे हों और उस यात्रा की अनुभूति हमें ज्ञानार्जन के साथ आनंद, मौज-मस्ती एवं रोमांच भी प्रदान करती है। हमारी यह यात्रा या तो किसी आवश्यक कार्य के उद्देश्य से हो सकती है या मनोरंजन के लिए पर्यटन के उद्देश्य से। सभ्यताओं के विकास के पूर्व से आदि मानव ने एक जगह से दूसरे जगह घूमते हुए अपना जीवनयापन किया है। उनके इस आरंभिक व्यवहार से मानव विकास के अनेक आयाम बढ़ते हुए आधुनिक रूप में भी दिखाई पड़ते हैं। अतः यह कह सकते हैं कि साहित्य की यह विधा 'यात्रा-वृत्तांत' लेखकों, रचनाकारों, साहित्यकारों और इतिहासकारों के लिए तो महत्वपूर्ण है ही, आम पाठकों के लिए भी जीवन-अनुभव को महसूस कराने में महती भूमिका का निर्वहन करती है। अपने पेशेवर विकास कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित छह मास की अवधि वाली ''सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या सामग्री विकास'' 21 दिवसीय कार्यशाला में दिल्ली में चयन किए जाने के उपरांत मुझे सहभागिता करने का अवसर मिला। इस लेख के माध्यम से कार्यशाला के दौरान एक दिवसीय दिल्ली परिभ्रमण के शैक्षिक अनुभवों को, जो समूह के साथ प्राप्त किए गए, को साझा करने का प्रयास किया गया है।

सीखने की प्रक्रिया जीवनपर्यंत चलती रहती है। यदि हम कुछ जानना, पता करना, मालूम करना चाहते हैं, तो इसके लिए जिज्ञासा, उत्कंठा और मन में इच्छा का होना पहली शर्त है। ज्ञान की प्राप्ति और जानकारी के स्रोत विभिन्न माध्यमों से प्राप्त किए जा सकते हैं और इन माध्यमों में यात्रा-वृत्तांत एक रोचक, मनोरंजक एवं सुलभ साधन है।

शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षक के कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए मैं (लेखक) अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति में वृद्धि करने की दृष्टि से कुछ नया प्राप्त करने का अवसर ढूँढ़ता रहता हूँ तथा इन्हीं प्रयासों से मुझे अवसर भी मिलता रहता है। इसी क्रम में मैंने अनायास ही रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (एनसीईआरटी) की वेबसाइट पर छह माह की अवधि की ''सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या सामग्री विकास'' में 'सर्टिफिकेट कार्यक्रम' से संबंधित सूचना देखी, जिसका उद्देश्य सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से जुड़े अध्यापक

**व्याख्याता,* बिहार शिक्षा सेवा, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय, सहरसा, बिहार 852201

और शिक्षक-प्रशिक्षकों में पाठ्यपुस्तक लेखन कौशलों को विकसित कर अकादमिक लेखन हेतु सक्षम बनाना था, जो शिक्षाविदों के साथ अपने व्यावहारिक अनुभवों के साथ मिलकर पाठ्यपुस्तक निर्माण में सहभागी बन सकें।

मैनें सुना था— "किताबें लिखकर लोग अमर हो जाते हैं।" इसी भावना के साथ शिक्षण के बीस वर्ष और प्रशिक्षण के पाँच वर्ष के अनुभवों को आवेदन में सम्मिलित कर प्रेषित किया और एक माह के उपरांत इस कार्यक्रम में चयनित किए जाने की सूचना मेरे ईमेल पर प्राप्त हुई। कार्यक्रम की अवधि अगस्त, 2023 से जनवरी, 2024 तक थी, जिसे तीन चरणों में सम्पन्न किया जाना था। प्रथम एवं तीसरा चरण ऑनलाइन माध्यम से तथा दूसरा चरण 21 दिवसीय आमने-सामने कार्यशाला के रूप में रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में था। चयनित प्रतिभागियों में अधिकांश शासकीय विद्यालयों एवं प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक पेय शिक्षक थे, जिन्हें अपने मूल विभाग से अनुमति प्राप्त कर कार्यशाला में सम्मिलित होना था। वृत्तिक विकास की इस राह में अनेक बाधाएँ, जैसे— राज्यों के चुनाव में ड्यूटी, सभी के विभागीय दायित्व और उससे जुड़े कार्यों का ससमय निष्पादन, वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पूर्व निर्धारित कार्य आदि होने के बावजूद भी अधिसंख्य चयनित प्रतिभागियों ने अनुमति प्राप्त कर ली। जब हम सभी कार्यशाला के प्रथम दिन इकट्ठे हुए, तब हम जान पाए कि हमारे समूह में लगभग संपूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व है, जिसमें कश्मीर से केरल तक और दमन-दीव से मेघालय तक "विविधता में एकता" वाली महक है। प्रतिभागियों के पूर्व अनुभव एवं उनके उत्साह को देखकर भविष्य में उनके अकादमिक लेखन के प्रति गंभीरता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता था।

कार्यशाला का प्रथम दिवस हम सभी के अकादमिक जीवन का अविस्मरणीय दिन था, जब भारतीय संस्कृति के अनुरूप क्षेत्रीय परिधानों में सजे एक-दूसरे से मिलकर रू-ब-रू हो रहे थे। रा.शै.अ.प्र.प. के भव्य एवं रमणीय परिसर के बीचों-बीच स्थित पुस्तकालय एवं प्रलेखन विभाग के प्रथम तल पर बने सम्मेलन कक्ष में सत्र समन्वयक एम. वी. श्रीनिवासन के द्वारा सभी का स्वागत करते हुए कार्यशाला की महत्ता और पुस्तकों की गरिमा पर प्रकाश डाला गया। परिचय-सत्र के साथ कार्यशाला की समय-सारणी के अनुरूप संस्थान के विभिन्न विभागों के विषय विशेषज्ञों सहित देश के अनेक लब्धप्रतिष्ठ विश्वविद्यालयों, स्वयंसेवी संगठनों से संबद्ध शिक्षाविदों व साधन सेवियों का ज्ञान और मार्गदर्शन हमें मिलता रहा। वहीं दूसरी ओर पाठ्यपुस्तक, पाठ्यक्रम, पाठ्यविवरण एवं पाठ्यचर्या से जुड़े लक्ष्यों व उद्देश्यों को केंद्रित कर सामाजिक विज्ञान विषय की गहराइयों और उसके विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को गहराइयों से सुनने, जानने और चिंतन कर अंतर्दृष्टि विकसित करने का अनोखा अवसर मिला।

कार्यशाला की विशेषता यह रही कि विभिन्न राज्यों की सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षा 5 से 12

तक की पाठ्यपुस्तकों की गहनता से समीक्षा की गई और उनके संदर्भों को समझने का भी सभी ने प्रयास किया। अलग-अलग राज्यों से आए शिक्षाविदों ने साधनसेवी (फेसिलिटेटर) के रूप में सामाजिक विज्ञान की पुस्तकों में राज्य की आवश्यकता, स्थानीयता, परिवेश और जनमानस की आकांक्षाओं को दृष्टिगत करके विषय के ज्ञान और कौशलों में वृद्धि करते हुए एक नई दृष्टि प्रदान की। उनका वाक्-कौशल, भाषाई समृद्धता, संप्रेषणीयता की कला और विनम्रता हमारे लिए अनुकरणीय थी। सत्र समन्वयक के द्वारा हमें निर्देश दिया गया था कि प्रत्येक प्रतिभागी सामाजिक विज्ञान के किसी भी विषय के दो शीर्षकों पर इच्छानुसार किन्हीं दो पाठों का लेखन अथवा पुनर्लेखन कर जमा करेंगे, जिसे हमने पूरी निष्ठा से पूर्ण किया। सत्र के दौरान गतिविधियों का आयोजन, जैसे— आपसी संवाद, तर्क-वितर्क, विषयों पर मत भिन्नता, सहमति-असहमति का दौर चलता रहता, परंतु अंत में सामाजिक विज्ञान विषय की प्रकृति के अनुरूप हम सामंजस्य स्थापित कर ही लेते थे। सत्र के उपरांत चाय की चुस्कियाँ, लाइब्रेरी की बुक शेल्फ से पुस्तकें निकालकर देखना, अध्यापक होकर भी विद्यार्थी जैसा व्यवहार करना हमारी दिनचर्या हो गई थी।

कार्यशाला की समय-सारणी में केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान द्वारा तीन दिवस का वह प्रशिक्षण भी सम्मिलित था, जहाँ हम सभी प्रतिभागियों ने पाँच समूहों में बँटकर दो-दो मिनट का ऑडियो तथा विडियो क्लिप तैयार किया। अध्यापक होकर भी बालीवुड के कलाकार का एहसास इस दौरान हम सभी को हुआ। अपनी अदाकारी स्क्रीन पर देखकर जहाँ हम रोमांचित थे, वहीं आई.सी.टी. के प्रभाव एवं उसकी महत्ता की व्यापकता को भी शिक्षा से जोड़कर हम समझने में सक्षम हुए। रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के अधिकारियों और कर्मियों ने हमें पाठ्यपुस्तक निर्माण की तकनीकी और कानूनी पहलुओं से अवगत कराते हुए एक पुस्तक के साकार रूप लेने की अंतिम प्रक्रिया भी बताई। जिससे हम यह जान पाए कि हमारी बौद्धिक पूँजी का संरक्षण किस प्रकार कॉपीराइट के द्वारा संभव हो पाता है। कार्यशाला से प्राप्त अनुभव हमारे पेशेवर (वृत्तिक) विकास में एक नई कड़ी के जुड़ने जैसा था। शिक्षण पेशे से एक कदम बढ़कर लेखन पेशे से जुड़ना राष्ट्र निर्माण में एक और यज्ञ में हवन करने जैसा था।

इस 21 दिवसीय कार्यशाला की समय सारिणी में रविवार के दिन "दिल्ली परिभ्रमण" का कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों के लिए पूर्व से निर्धारित था। कार्यशाला के आरंभिक दिन से लगातार छह दिनों तक सीखने योग्य अनुकूल परिवेश में चर्चा-परिचर्चा, संवाद, व्याख्यान के अतिरिक्त बाह्य वातावरण में जाकर प्रकृति के साथ ऐतिहासिकता, संस्कृति, आधुनिकता को जानना हम सभी के लिए आनंददायी व सुखद अनुभूति का अवसर था। सभी प्रतिभागियों से मिलकर बना समूह एक सम्पूर्ण भारत की बहुआयामी संस्कृतियों का परिदृश्य उपस्थित कर रहा था।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद परिसर से रविवार 5 नवंबर, 2023 की सुबह 9:30 बजे हम सभी बस से अपने पहले पड़ाव नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय गए। विभिन्न दृश्यों यथा सुबह की खरीदारी करते लोग, एनेक्सी और महानगरीय भवनों को बस की खिड़कियों से देखते हुए संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर पहुँचे। हमारे समूह का नेतृत्व और समन्वय शरद जी को सौंपा गया था, वे अपना दायित्व सहजता से पूर्ण उत्साह के साथ निभा रहे थे। प्रवेश द्वार पर टिकट की खरीदी के साथ सुरक्षा जाँच के पश्चात हम सभी राष्ट्रीय संग्रहालय के तीन तलों पर अपने मित्रों के साथ छोटे उपसमूहों में बँटकर बारीकियों के साथ वीथिकाओं का गहराई से अवलोकन करते हुए आपस में चर्चा करने लगे। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के दौरान पढ़ी, देखी और समझी गई विषयवस्तु को भी उससे जोड़कर देखते हुए अपनी समझ बढ़ाने लगे। संग्रहालय की वीथिकाओं में काल, युग, शासन, कला, संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की दुर्लभ मूर्तियों, पांडुलिपियों, चित्रों, मॉडलों, सिक्कों, वस्त्रों, जनजातीय जीवन, संगीत, बौद्धधर्म, देशी व विदेशी कलाकृतियों को देखकर एक सुखद और संतुष्टि का भाव अनुभव कर रहे थे, जैसे बहुत-सी अनसुलझी और अनकही बातों को मैंने जान लिया हो।

सामाजिक विज्ञान के अध्यापन के आरंभ के पूर्व ही देश के राष्ट्रीय संग्रहालयों का अवलोकन अनिवार्य किया जाना चाहिए, ऐसा मुझे लग रहा था। दो घंटे भ्रमण के उपरांत भी व्यापकता एवं समग्रता के साथ सब प्रदर्शनीय सामग्रियों की एक झलक ही प्राप्त की जा सकी थी। आप काम चाहे कुछ भी करें, भूख का एहसास अपने नियत समय पर हो ही जाता है। हम सभी ने रा.शै.अ.प्र.प. कैंटीन से उपलब्ध कराए गए भोजन का आनंद भोज के रूप में लिया और स्वच्छता तथा अपनी सार्वजनिक जीवन शैली में शिष्टता का पालन करते हुए प्लेट, ग्लास और उपयोग की गई सामग्रियों को यथा-स्थान निपटाते हुए परिभ्रमण के दूसरे पड़ाव पर पहुँच गए।

प्रगति मैदान स्थित नवनिर्मित भारत मंडपम उस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी स्थल के रूप में पूरे भारतवर्ष में चर्चित हो चुका है, जहाँ विगत माह (9–10 सितंबर, 2023) विश्व के देशों के शासनाध्यक्ष, राष्ट्राध्यक्ष और नेताओं का जमावड़ा G-20 की बैठक के लिए हुआ था। विशाल परिसर में स्थित भव्य एवं अलंकृत नवनिर्मित सभागार भारत की आर्थिक समृद्धि की ओर भी संकेत करता दिखाई दे रहा था। उसी स्थल पर 'वर्ल्ड फूड इंडिया' का तीन दिवसीय समारोह चल रहा था, जिसमें मानव की पहली आवश्यकता 'भोजन' को केंद्र बिंदु बनाकर देशी, विदेशी और विभिन्न क्षेत्रीय आधार पर स्टॉल लगे थे। जहाँ प्राचीन और अति आधुनिक आहार, उसके निर्माण की प्रक्रिया, आधुनिक पैकेजिंग, संरक्षण, बिक्री, व्यापार, उद्यम को लेकर चर्चा-परिचर्चा एवं व्यापार की नीतियों को लेकर संवाद भी हुआ था। उस जगह पर विज्ञान एवं आईसीटी के उपयोग एवं आधुनिक

तथा महानगरीय जीवन-शैली के जीवंत रूप भी दिखाई दे रहे थे। ग्रामीण भारत के सामान्य आहार, खाद्य-सामग्री और जैविक उत्पाद भी नये रूप में हम देख रहे थे। जहाँ संग्रहालय की वीथिकाएँ हमारे इतिहास और संस्कृति के विशिष्ट पहलुओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रही थीं, वहीं वर्ल्ड फूड इंडिया बाजारवाद, उपभोक्ता-संस्कृति एवं आर्थिक उत्थान को दर्शा रहा था। लगातार घूमते हुए और भीड़ भरे माहौल से हम थक चुके थे, परंतु अब बारी उस जगह के दर्शन की थी, जहाँ पहुँचकर सभी अपने को धन्य पाते हैं, चाहे देशी हो या विदेशी।

राष्ट्रपिता की समाधि—राजघाट, जो संपूर्ण देश के लिए पवित्र दर्शनीय राष्ट्रीय स्मारक है, जहाँ प्रत्येक नागरिक अपनी श्रद्धा-सुमन प्रकट कर राष्ट्रीय गौरव की सुखद अनुभूति करता है, वहीं उस शांत एवं प्रकृति की गोद में स्थित बापू का समाधि स्थल देश के स्वतंत्रता-संग्राम के शहीदों के प्रति नम आँखों से आध्यात्मिकता की ओर भी हमें प्रेरित करता है, जिसे हम सत्याग्रह के सिद्धांतों में पाते हैं। समाधि स्थल के निकट उद्यानों में विश्राम करते हुए सभी प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी मातृभाषा-प्रांतीय भाषा में शब्दों की श्रद्धांजलि भी दी, जिसे हमारे साथियों द्वारा रिकॉर्ड किया गया। वह भी एक अद्‌भुत क्षण था, जब हम इसकी रिकॉर्डिंग के लिए अपनी बारी की प्रतिक्षा कर रहे थे। ऐसा लगा कुछ देर और ठहरते परंतु समय तो अपनी ही गति से चलता है। अब हम यात्रा के अंतिम चरण में थे। सुबह से चलते-चलते सभी के चेहरे पर थकान भी दस्तक दे चुकी थी, सूर्य भी अपनी देहरी लांघकर छुपना चाह रहा था। हमारा बस ड्राइवर और उसका सहकर्मी इस तरह हमें देख रहे थे, मानों इशारा मिलते ही बिना देर किए अगली मंजिल की ओर बढ़ चलें, क्योंकि उनके साथ हम सभी को पहले से पता था कि आज के दिल्ली परिभ्रमण का यह अंतिम पड़ाव है। रविवार का दिन था, इसलिए कर्तव्य-पथ पर चलते हुए हमारे बस ड्राइवर को भी अपने घर जाने की जल्दी थी।

सरपट दौड़ती हुई बस इंडिया गेट के निकट अपने निर्धारित पार्किंग स्थल पर रुकी, हम लोग जल्दी से उतरकर 'राष्ट्रीय वॉर मेमोरियल' की ओर दौड़े क्योंकि साँय 6 बजे के बाद उस स्थल पर प्रवेश-निषेध हो जाता है। यहाँ पर शहीदों की याद में 'लौ' जलती रहती है, यह मैंने सुना था, अब वास्तव में आँखों ने उसे देखा, हाथों ने नमन किया और हृदय ने अनुभव किया। पीढ़ियाँ यहाँ आती रहेंगी और विरासतों को संजोते हुए हम सच्चे और आदर्श नागरिक बनने की सीख प्राप्त करते रहेंगे। सुभाष चन्द्र बोस 'नेताजी' की मूर्ति और इंडिया गेट को रोशनी में नहाता हुआ देखकर देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण एक अद्‌भूत एवं दुर्लभ नजारा भी देखने को मिला। जब विदेशी महिलाओं एवं पुरुषों का समूह भारतीय धार्मिक परिधान में इस्कॉन संस्था से प्रेरित वाद्ययंत्रों के साथ "हरे-रामा, हरे-कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा, हरे-हरे" गाते हुए इंडिया गेट की परिक्रमा करते दिखे। भारत की राजधानी नई दिल्ली के केंद्र में इंडिया गेट और उस इंडिया गेट पर भारत और विभिन्न देशों के नागरिक उत्सव धर्मिता का परिचय देते हुए जोश,

भावना, जुनून, गौरव, राष्ट्रीयता, देशभक्ति एवं उत्साह के साथ आध्यात्मिकता और बहुआयामी संस्कृति को प्रदर्शित करते हुए सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय सहित 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय भावना को चरितार्थ कर रहे थे। इसके पश्चात हमारी बस उस स्थल से चलकर अंतिम पड़ाव रा.शै.अ.प्र.प. में आई। ऐसा मेरा विश्वास है कि कार्यशाला के दौरान दिल्ली परिभ्रमण का यह सुखद अवसर हम सभी प्रतिभागियों के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।